परिणीता

गणेश पाण्डेय

कविता

परिणीता

गणेश पाण्डेय

अनुक्रम

1	प्रथम परिणीता	3
2	गर्वीली बिंदी	7
3	एक चांद कम पड़ जाता है	9
4	गायिका	10
5	उस चांद से कहना	12
6	इतनी अच्छी क्यों हो चंदा	15
7	तुम्हें मांग सकता हूं फिर से	17
8	कहां जान पाते हैं सब लोग	19
9	घर	21
10	भरभराकर ढ़ह गया है	37
11	किसी का गुमशुदा सामान हूं	39
12	जिसे ले जाना हो मुझे आए	41
13	एक–एक पत्ती की भूमिका है	44
14	इस अटूट वर्षा में	46
15	बुरा यह कि मैं कम बुरा हुआ	47
16	फिर मिलेंगे चांद	49
17	कह दो अपने जनरल से	51
18	कब्र में लेटी रहने वाली स्त्री	53
19	मिलना तो ऐसे	57
20	बोलो मीता	60
21	आत्मा का एकांत आलाप	62
22	एक दुख ही तो है मेरे पास	64
23	तुम्हीं बताओ	69
24	कोई आए उसे फिर से जगाए	72
25	ओ केरल की उन्नत ग्रामबाला	74
26	वर्दी में	76
27	उसका नन्हा चांद	77
28	परिणीता	79

प्रथम परिणीता

जिस तलुए की कोमलता से
वंचित है
मेरी पृथ्वी का एक–एक कण
घास के एक–एक तिनके से
उठती है जिसके लिए पुकार
फिर से जिसे स्पर्श करने के लिए
मुझमें नहीं बचा है अब
चुटकी भर धैर्य
जिसके पैरों की झंकार
सुनने के लिए
बेचैन है
मेरे घर के आसपास
गुलमोहर के उदास वृक्षों की कतार
और तुलसी का चौरा
जिसकी
सुदीर्घ काली वेणी में लग कर
खिल जाने के लिए आतुर हैं
चांदनी के सफेद नन्हे फूल
और
असमय
जिसके चले जाने के शूल से
आहत है मेरे आकाश का वक्ष
और धरती का अंतस्तल
तुम हो
तुम्हीं हो
मेरी प्रथम परिणीता
मेरे विपन्न जीवन की शोभा
जिसके होने और न होने से
होता है मेरे जीवन में
दिन और रात का फेरा

धूप और छांव
होता है नीचे–ऊपर
मेरे घर
और
मेरे दिल
और दिमाग का तापमान
अच्छा हुआ
जो तुम
जा कर भी जा नहीं सकी
इस निर्मम संसार में मुझे छोड़कर
अकेला
सोचा होगा कैसे पिएंगे प्रीतम
सुबह–शाम
गुड़
अदरक
और गोलमिर्च की चाय
भूख लगेगी तो कौन देगा
मीठी आंच में पकी हुई
रोटी
और मेथी का साग
दुखेगा सिर
तो दबाएगा कौन
आहिस्ता–आहिस्ता
सारी रात
रोएंगे जब मेरे प्रीतम
तो किसके आंचल में पोछेंगे
रेत की मछली जैसी
अपनी तड़पती आंखें
और जब मुझे देख नहीं पाएंगे
तो जी कैसे पाएंगे
कैसे समझाएंगे
खुद को
कैसे पूरी करेंगे जीवन की कविता
कैसे करेंगे मुझे प्यार

अच्छा हुआ
मीता
मेरी प्रथम परिणीता
छोड़ गयी मेरे पास
स्मृतियों की गीता
दे गयी
एक और मीता
परिणीता
जिसके जीवन में शामिल है
तुम्हारा जीवन
जिसके सिंदूर में है तुम्हारा सिंदूर
जिसके प्यार में है
तुम्हारा प्यार
जिसके मुखड़े में है तुम्हारा मुखड़ा
जिसके आंचल में है तुम्हारा आंचल
जिसकी गोद में है तुम्हारी गोद
कितना अभागा हूं
भर नहीं पाया तुम्हारी गोद
तुम्हारे कानों में पहना नहीं पाया
किलकारी के एक–दो कर्णफूल
तुम्हारी आंखों के कैमरे में
उतार नहीं पाया
तुम्हारी ही बालछवि
किससे पूछूं कि जीवन के चित्र
इतने धुंधले क्यों होते हैं
समय की धूल
उड़ती है
तो आंधी की तरह क्यों उड़ती है
प्रेम का प्रतिफल
दुख क्यों होता है
और
अक्सर
तुम जैसी स्त्री का सखियारा
दुख से क्यों होता है

तुम नहीं हो
तुम्हारी सखी है
है दुख है तुम्हारी सखी है
कर लिया है उसी से ब्याह
हूं जिसके संग
देखता हूं उसी में
तुम्हें नित।